प्रा.डॉ.वसन्त केशव मोरे
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
एवं
भूतपूर्व अधिष्ठाता,कलासंकाय
शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर
महाराष्ट्र - ४१६ ००४

प्र मा ण प त्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री रावसाहेब बाबुराव पाटील ने मेरे निर्देशन में "वृन्दावनलाल वर्मा के "मृगनयनी" उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन" लघुशोध-प्रबन्ध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम. फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए लिखा है। पूर्वयोजनानुसार सम्पन्न इस कार्य में शोध-छात्र ने मेरे सुझावों का पूरी तरह से पालन किया है। जो तथ्य इसमें प्रस्तुत किये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोधछात्र के कार्य से मैं सन्तुष्ट हूँ।

निर्देशक

(प्रा.डॉ. वसन्त केशव मोरे)
Head, Hindi Dept.
Shivaji University,
Kolhapur - 416 004.

कोल्हापुर।
दिनांक :29: 8 :१९९२।

भूमिका

इस लघुशोध-प्रबन्ध का विषय और उद्देश्य ----

वृन्दावनलाल वर्मा ऐतिहासिक उपन्यासकारों में एक महत्वपूर्ण उपन्यासकार हैं। `मृगनयनी` वर्माजी का ऐतिहासिक विषयवस्तु को लेकर लिखा हुआ उपन्यास है। वर्माजी के `मृगनयनी` उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन ही इस लघुशोध-प्रबन्ध का विषय और उद्देश्य है।

इतिहास आरंभ से ही मेरे लिए प्रिय विषय रहा है। मेरा विश्वास है कि इतिहास के ज्ञान के अभाव में मनुष्य अपने उज्ज्वल भविष्य की कल्पना कर नहीं सकता। इतिहास का ज्ञान वर्तमान और भविष्य को उज्ज्वल बनाने में दीपस्तंभ का काम करता है। इतिहास हमारे देश की संस्कृति, सभ्यता और समाज व्यवस्था का परिचय कराता है। वर्माजी तो मुझे इतिहास के गायक लगे। वर्माजी के सभी ऐतिहासिक उपन्यासों में से `मृगनयनी` उपन्यास ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया और उसी दिन मैंने इस उपन्यास का विशेष अध्ययन करना तय किया। यह लघुशोध प्रबन्ध मेरे उसी संकल्प का परिणाम है।

इस विषय का विवेचन करते समय मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न खड़े हो चुके थे।

१) किस परिवेश में वृन्दावनलाल वर्माजी के व्यक्तित्व और कृतित्व का विकास हुआ है?

२) वृन्दावनलाल वर्माजी ने ऐतिहासिक विषय वस्तु को लेकर उपन्यास क्यों लिखे? अथवा ऐतिहासिक विषयपर उपन्यास लिखने की प्रेरणा वर्माजी को कैसी मिली?

३) 'मृगनयनी' उपन्यास की कथावस्तु में ऐतिहासिकता की रक्षा कहाँ तक हुयी है ?

४) ऐतिहासिक उपन्यासकारों में वृन्दावनलाल वर्माजी का स्थान क्या है ?

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर अपने विषय के विवेचन के दौरान जो मिले हैं, उनको उपसंहार में लिख दिया है । अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध-प्रबन्ध को निम्नलिखित चार अध्यायों में विभाजित किया है ---

१) प्रथम अध्याय का शीर्षक है — "डॉ.वृन्दावनलाल वर्मा व्यक्तित्व और कृतित्व" । इस अध्याय में वर्माजी का जन्म,परिवार, शिक्षा,नौकरी आदि का विवेचन कर उनके व्यक्तित्व के विशेषताओंकी चर्चा की है । साथ ही डॉ.वृन्दावनलाल वर्मा के कृतित्व का परिचय देकर अंत में निष्कर्ष लिख दिया है ।

२) द्वितीय अध्याय का शीर्षक है — "हिन्दी का ऐतिहासिक उपन्यास साहित्य" इस अध्याय में उपन्यास का महत्व,उपन्यास के भेद, हिन्दी का ऐतिहासिक उपन्यास साहित्य, इतिहास का अर्थ आदि का विवेचन किया है । इसके साथ ही इसमें ऐतिहासिक उपन्यास का प्रारम्भ, हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास के तीन उत्थान तथा वृन्दावनलाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों का विवेचन किया है और अंत में प्राप्त निष्कर्ष लिख दिये हैं ।

३) तृतीय अध्याय का शीर्षक है — 'मृगनयनी' उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन ।

मेरे इस शोध प्रबन्ध का महत्वपूर्ण अध्याय है । इसमें मैंने 'मृगनयनी' उपन्यास की कथावस्तु,चरित्र-चित्रण,वार्तालाप, देश-काल-वातावरण,भाषाशैली तथा उद्देश्य का विस्तार से विवेचन किया है । इसके साथही इस उपन्यास के प्रत्येक तत्व के विवेचन के उपरान्त प्राप्त निष्कर्ष लिख दिये हैं ।

४) चतुर्थ अध्याय उपसंहार का है । इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में जो प्रश्न खड़े हुये थे,उनके उत्तर मैंने उपसंहार में दर्ज किये हैं । इसके साथही इसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के प्राप्त मुद्दों के आधारपर वैज्ञानिक पध्दतिसे

निकाले गये निष्कर्ष लिख दिये हैं ।

अन्त में परिशिष्ट में वृन्दावनलाल वर्मा के पुत्र डॉ. सत्यदेव वर्मा के एक महत्वपूर्ण पत्र दिये हैं और अंत में संदर्भ ग्रन्थ सूची दी है ।

इस कार्य को सम्पन्न बनाने में मुझे जिन विद्वानोंका मार्गदर्शन प्राप्त हुआ उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना नैतिक दायित्व समझता हूँ । किसी भी विषयपर विशेष अध्ययन करना बडी कठिण बात है । ' मृगनयनी ' ऐतिहासिक उपन्यास है, इसके विविधांगी पक्षों को देखने के लिए, उसपर अध्ययन करनेके लिए और यह लघुशोध-प्रबन्ध पूर्ण करने में मेरे गुरुवर्य डॉ. व्ही.के.मोरेजी अध्यक्ष हिन्दी विभाग एवं भूतपूर्व अधिष्ठाता,कला संकाय,शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर ने अनमोल सहयोग दिया है । उनके प्रति कृतज्ञ होना मेरा परमधर्म है । आप के सहयोग के बिना यह कार्य संपन्न होने की कल्पना ही नहीं की जा सकती थी । प्रस्तुत लघुशोध-प्रबन्ध आपही के सुयोग्य निर्देशन का परिनाम है । आप के इस अनुग्रह से ऋण होना मेरे लिए असंभव है ।

डॉ.अर्जुन चव्हाण,कर्मवीर भाऊराव पाटिल, महाविद्यालय,इस्लामपुर के निरन्तर प्रोत्साहन तथा प्रेरणा से मेरा कार्य अत्यंत प्रशस्त और सरल हुआ उनका मैं ऋणी हूँ । प्रा. तिवलेजी, प्रा.वेदपाठकजी ,डॉ.के.पी.शहाजी,प्रा.कु.रजनी भागवतजी ने समय समय पर मुझे प्रोत्साहित किया उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना दायित्व समझता हूँ । इसके साथही शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय का सहयोग मैं कभी भूल नहीं सकता । इस ग्रंथालय के ग्रंथपाल एवं संबंधित सभी कर्मचारियोंका तथा पी.जी. विभाग के सभी कर्मचारियोंका मैं आभारी हूँ । मेरे पूज्य माता-पिताजी एवं परिवार की प्रेरणा के साथ ही मेरा मित्र परिवार तथा रंगराव डोंगलेजी,सौ.डॉ. व्ही.के.मोरेजी, स्नेही जनों का पर्याप्त सहकार्य है, जिसकी बदलौत मैं यह प्रबन्ध पूर्ण कर सका । अन्त मे उन सब के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ, जिनका इस कार्य को सम्पन्न करने में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोग प्राप्त हुआ है । तथा मैं टंकलेखनिक श्री बालकृष्ण रा.सावंत,कोल्हापुर उनकाभी मैं आभारी हूँ ।

शोध-छात्र

दिनांक - 29/8/1992 रावसाहेब बापूराव पाटील